

सिद्ध गोसटि अरथात नाम दा सिधांत

(सुमेर परबत ते सिद्धां जोगियां नाल गलबात)

व्याख्या

क्युकि जोगी लोक समाधी ला चुप्प चाप बैठे रहन्दे ने। सुरत जिधर जिधर जांदी है बस ओसे ते ध्यान करी जांदे ने। गुरू साहब ने इस तौर-तरीके दा खंडन कीता है ते उपदेश दिता है निरंकार दी सिफत सालाह जां जस्स कहन, गाउन तों बिनां भगती विअररुथ है। रब्ब दे गुणगान नूं नाम केहा है ते केहा है कि नाम ही उस दी प्रापती दा इको इक्क रसता है। “सबदे का निबेड़ा सुनि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होयी ॥”

सुमेर भाव कैलाश परबत ते सिद्ध जोगियां ते गुरू साहब दे सवाल (?) - जवाब (●)। इह गोशटी भाव गल्ल बात रामकली राग विच्च 'सिध गोसटि' गुरू ग्रंथ साहब दे अंग 938 तों 946 तकक सभायमान है। उंज होर वी अनेकां थावां ते जोगियां दे मट्टां ते गुरू साहब ने जा जा प्रचार कीता। पर 'सिध गोसटि' तीसरी उदासी वेले 1519 दियां गरमियां विच हिमाचली पहाड़ां ते होयी है।

इथे आपनी तुच्छ जेही अकल अनुसार सिरफ गोसटि दा भाव अरथ देन दी कोशिश कीती है। पाठक नूं चाहीदा है कि मूल सिध गोसटि नाल नाल पड़े। ❖ बरेकटां विच मूल सिध गोसटि दी तुक दा नम्बर दिता है। सारी बानी गुरू साहब दी ही लिखत है। सवाल सिद्धां जोगियां दे मत्र के चलीए। जवाब गुरू साहब दे ने :-

सवाल (?) - बच्चे तुसी कौन हुन्दे हो? तेरा नां की है? किथों दे रहन वाले हो? इथे किस तरां पहुँचे? (2)

जवाब (●) नानक मेरा नां है। अकाल पुरख दे भाने च तुर्या फिरदा ही रहन्दा हां। साडे जियां दा केहड़ा टिकाणा? सथिर टिकाना तां सिरफ निरंकार प्रभू दा। (3)

? - इह जीवन जां दुनिया भ्यानक ते अथाह सागर है, किवे पार लुंघीए इस तों? गुरू दे दर तों किवे प्रापती हो सकदी है?

● जिवे मुरगाबी पानी विच्च तरदी रहन्दी है जां जिवे चिक्कड़ विच्च सुहना कमल फुल्ल खिड़दा है, ऐन एसे तरां इस जीवन समुन्दर विच्च आपां तर सकदे हां जे साडा मत्र शबद नाल जुड़या रहेगा तां। दुनिया आसां उमीदां च जीउदी है असी नाम दे सहारे इस आसवन्द जगत विच्च सच्च नूं पछाणदे होए, चडूहदी कल्हा विच्च जीउदे हां। (5)

? - इह किवे हो सकदा है कि गुरू दे दर ते गयां साडा मन शांत हो जावेगा?

● नाम दे आसरे नाल जदों तुसी जीवन दे सच्च नूं पछान लवोगे तां मत्र ठहरायो विच्च आ जावेगा। (6)

? - जोग मत दे ग्यान अनुसार, भायी असी तां घर बार तों सुरखरू हो चुक्के हां सभ कुझ त्याग दिता है। बाहरो कन्द मूल खा के गुजारा करी जाईदा है। फिर तीरथ यातरा करदे मसत रहीदा है। कोयी फिरर चिंता नही।

दस्सो तुहाडा की राह है? (7)

जवाब - सुआमी जी तुसी गलत कह रहे हो। घर तां छडु दिता तुसां, पर मत्र तां तुहाडा सदा भटकदा ही रहन्दा वा। नाम तों बिनां, जीवन दे सच्च नूं समझे बगैर मत्र विच्च टिकायो आ ही नही सकदा, मत्र दी भुक्ख नही मरदी। असी तां गिसत विच्च रह के ही सजम विच्च हां। (खाने वी थोड़ा आं, सौने वी आं।) (8)

सवाल (जोगी जोगिन्दर) - ऐ नानक! तुसी वी जोग दी विचारधारा ग्रेहन करो। साधू भेख धारन करो। बारां पंथां विच्चों कोयी राह चुन लयो। जोग-जुगत नाल ही सिरफ तुहाडा कल्यान हो सकदा है। (9)

● तुसी कत्री मुन्दरां पवाउना चाहन्दे हो मैनु? मै तां हिरदे विच्च ही मुन्दरी पा लई है, शबद दी। जिस करके मै मोह मायआ तों निरलेप ते काम, क्रोध, लोभ, मोह अते हंकार तों सुरखरू हो गया हां। (10)

क्युकि नाम रांही मै सारी कहानी समझ लई है। सच्च नूं समझन ते हुन मैनु संतोख आ गया है। (11)

सवाल (जोगी) - मुकती तों की समझदे हो? कुझ समझ है वी सही तुहानूं? कौन मुकत हुन्दा है? गुपत कौन? कौन 84 दे गेड़ विच्च पर्या रहन्दा है? (12)

● निरंकार गुपत रूप विच्च हर रचना विच्च है। गुरमुख सच्च विच्च समा के मुकत हो जांदे ने। निगुरे मनमुख 84 दे गेड़ विच्च भटकदे, जंमदे मरदे रहन्दे ने। (13)

? - जीव क्यु दुक्खी है? (14)

जवाब - ग्यान वेहना बन्दा गवाच्या होया है ते दुक्खी है। सच्चे गुरू दे दर तों ग्यान हासल करके जीवन दा हनेरा मिट्ट जांदा है। हऊमे तों जदों छुटकारा हो जांदा है तां आपे सुत्र (खालीपन) हासल हो जांदा है। (15) (32) (सुत्र अवसथा बुद्ध मत दी धारना है जिन्न जोगियां वी अपना ल्या है)

? - की लभदे पए हो? घर बार क्यो छडु दिता? (17)

● वक्ख वक्ख विचारधारावां दी खोज कर रेहा हां। कित्थे कित्थे सच्च है इह वेख रेहा हां। (18)

? - डरुवे तू कलस कुगत नरल आडनी इरुवरर, आसरर उडुीडरं खतडु कीतलरर। इह अरुक कलवे ररडुडर? (19)

● सतलगुर डी शरन वलरुव कुर के, शडड ते गुरन ने डेरलरर इरुवरर डुकर डलतलरर ते डु अकुर हर कुरल वलरुव नलरकर डी कुत अनुडर कर सकडर हं। तलरुे गुरन (रकु, सतु, तडु) डे डलरुन करके इह लुहर ररडुव सकडर हं। डुनु डतर है, डुकती तरं नलरकर डी डखशश सदकर है। (20)

? - उह केहडे लुक ने कुरनरं सुनुर अवसथर हसरल कीती। डुत डर डुर कलवे डुकुंगर कलवे नलरडु अवसथर हसरल हुवेगी? (21)

● सडर, संतुख डरव डरनर डुनुररं ते गुरु डे शडड ररंही हऊडे रूडुी कुरहर नू डुकरउन नरल ररनहरर डी हुड डर अहसरस हुवेगी। (21)

? - कुरल कलथुं आउडर है ते कलथुं कुरं डर है? (22)

● नलरकर डर इरुक खल ररल रेहर है उसडे हुकड तहत ही कुरल डुडर हुनुडे ते डरडे खडडे रहनुडे ने। सरुव नरल कुडुडे रहन ते शडड ररंही डुर डुकती डी डुररती है। (22)

डुडुलर सलधरंत इह है कल गुरन ररंही सरुसडी डे ररनहरर नू खुकुणर, डरनरणर, नलरकर डे हुकड ते सरुव डी अहडुडत सडडणर। (23)

डुर सडड आणुी कल कलवे उह नलरगुरन तुं सरगुरन सररूड डडलडर है। कुरन डरन तुं कुरल डी डुकती सतलगुर डे डलते गुरन करके शडड डे आसरे ही हु सकडी है, उह वी तरं कु नलरकर डी कलरडर डुरशडी हु कुरे तरं। इह तरं कुरे कुर डरन वरली गल्ल है डुर सड कुडुड सडडु आ कुरं डर है, कुरे हऊडे डी कहरनी सडडु आउडी है तरं। (24)

उस सरुवे नलरकर तुं ररनर डुडर हुनुडी है ते ओसे वलरुव ही सडु कुरं डी है। केहडे सडड डे लडु लगे ने उह सुखी ने ते नरड वहुने डनडुख अगुरनतर करके डरक रहे ने ते डुकुखी ने। (25)

डनडुख डुल्लड डडुडर डसरणरं वलरुव कुर, कुरं डरं डर डर करडे डुरडे ने। डेगरनलर वल धुरन हुनुडर है। डर केहडे सरुव नरल कुडुडे ने उह अननुड वलरुव हन। (26)

गुरु डे सलरुख (गुरडुख) सरुवे नलरकर डर डनुर वलरुव डर ररुखडे हन। डरनी डडुडडे, हरी डे गुरन गरउडे गरउडे उतड डडडु डर कुरं डे ने। गुरडुख तरं सुआस सुआस नरल हरी डी अररधनर करडे हन। (27)

गुरु तुहरनुं वेड गुरन डी वरकडुडत करर डलनुडर है। आह केहडुडर डर डर अनुर डलर गल्लरं करडे हु सतलगुरु इंस डरडड सरर गुरन करर, तुहरनुं डुकत कर डलनुडर है। (28)

गुरु डी शरन गुरर तुहरडर हऊडे तुं रुरुकरर हु कुरं डर है। केहडी तुसी रहसुसर डी गल्ल डर करडे हु उह सड खुल्ल कुरे हन। (सुणलुे कुगु कुगुरत तनु डुडु) (29)

इह सरुसडी डी ररनर ते डुर इथे कु खल रररर आ करते ने इह सरर गुरन तुहरनुं सडड ररंही डललेगर। सरुवे गुरन ते नरड डरनर, नरं तुहरनुं सडर कुर वलरुव इकुरत डत डललेगी ते नरं ही तुहरडर उधर हुवेगी। (30)

गुरडुख डी डुडु रुरशनरड कुरं डी है कुरल करके उहनुं डरडे रंगे डी सुकुी हु कुरं डी है। आड तरडर है ते सरथलररं नू वी नरल तरर ललकुरं डर है। (डनुर डरवह डुखु डुआरु ॥ डनुर डरवरु सरधररु ॥) (31) (57)

नरड डरव ररुव डी सलडत सलरह तुं डुलर डरुे कुरी वी सडड (कुरं, डनुर, तंनुर आडल) सड डेकर हन। (33)

कुगुरलर डे सरुे 12 कुरं सनुररसलर डे 10 डुरकुरर कलसे वलरुव वी हुवे कु नरड नही कडडर तरं ऐवे डरकडर डुडर है। (34)

गुरडुखरं नू थरं थरं ठुकररं नही डुडलरर। (डनुर डररगल ठरक न डुड ॥)- (35)

गुरडुखरं नू सडरर वलरुव डरन सतलकर डलडर है। (डनुर डरतल सुड डरगडु कुर ॥)- (36, 41)

गुरडुखरं नू शरसतररं वेडरं डी असललरत डर अहसरस हु कुरं डर है। (सुणलुे सरसत सलडुतल वेड ॥) - 37

नलगुरर वहरडरं डरडर वलरुव डसुडर रहनुडर है। (38)

गुरडुख हर थरं कुरतडर ही कुरतडर है। (वलरुव तीर ते डरवे डुनलररं नू सडडु नरं वी आवु) ऐसे सलधरंत तहत रुरड डी रुरवन ते कुरत हुनुडी है। (39, 40)

गुरडुख नरड डे लडु लगर रहनुडर है डरव उह हडेशरं ररुव डे गुरन गरउडर रहनुडर है। (42)

? - तेरर डुल कुरी है केहडे आसरे डुडर डुरडर ऐ तेरे गुरु डर कुरं नरं है केहडर तू रेलर ऐ (42)

● सवरडी कु सरह आउडर है तरं रलरडडरन हं। सतलगुरु तुं शडड वरली डत लई है। सडड डी धुनुर ते सुरत रहनुडी है। कथर वी ररुव डी ही ते हउडे तुं रुरुकरर हु गुरर है। सु इह डनुर लरु शडड ही डेरर गुरु है। (44)

? - सरडर हंकर, सरडी डु डु कलवे डलतेगी? (45)

कुररडु - शडड डी कडरुडु करनी है ते डरकी ररुव ते रुरुडु डेनर है। उहडे डुड वलरुव रहनर है। उहडी कुररडु डुरशडी ते गल्ल डुकनी ऐ (47)

? - केहडर तरुकर है कुरल सदकर डुनलर डी तडश सरहडन वी डनुर सीतल डणुडर रहे? (48)

● शडड डी कडरुडु सदकर तुहरनुं डुकुख सुखु

ਪੋਹੇਗਾ ਹੀ ਨਹੀ। (49)

ਸਿਰੇ ਦੀ ਗਲ ਕਿ ਨਾਮ ਹੀ ਝਕੋ ਝਕ ਰਾਹ ਹੈ। (50, 51)

ਤੁਸੀ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਸੁਤ੍ਰ ਸੁਤ੍ਰ ਦੀ ਦੁਹਾਈ ਦੌੜ ਜਾ ਰਹੇ ਹੋ ਭਾਵ ਉਹ ਅਵਸਥਾ ਜਦੋਂ ਆਸਾ ਉਮੀਦਾਂ ਮੁਕਕ ਜਾਂਦਿਆਂ ਹਨ। ਭਾਈ ਇਹ ਅਵਸਥਾ ਵੀ ਨਾਮ ਤੇ ਗਿਆਨ ਨਾਲ ਹੀ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਬੰਦਾ ਨਿਰੰਕਾਰ ਵਰਗਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਜਦੋਂ ਮਤ੍ਰ ਵਿਚ ਸਬਰ ਸੰਤੋਖ ਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਜਦੋਂ 9 ਦਰਵਾਜ਼ਿਆਂ ਦੀ ਭੁਕਕ ਮਿਟ੍ਰ ਜਾਵੇਗੀ। (52-53, 54) (ਸੁਤ੍ਰ ਜਾਂ ਸੁਤ੍ਰਯ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ ਬੁਝ ਮਤ ਦਾ ਹੈ।)**

? - ਕੁਬੁਝ ਕਿਵੇ ਮਿਟੇਗੀ ਭਾਵ ਕਦੋਂ ਮਤ੍ਰ ਬੁਰਾਈਆਂ ਦਾ ਟਾਗ ਕਰੇਗਾ? (55)

ਜਵਾਬ - ਜਦੋਂ ਗਿਆਨ ਰਾਂਹੀ ਸਮਝ ਪੈ ਗੌੜੀ। ਹੜਮੇ ਦਾ ਵਰਤਾਰਾ ਜਦੋਂ ਸਮਝ ਲਿਆ ਤਾਂ ਫਿਰ ਬੰਦਾ ਰਜਾ ਵਿਚ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। (56)

? - ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਵਾਸਾ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਕੇਹੜੇ ਟਿਕਾਨੇ ਤੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ ਸਾਡਾ ਸਾਹ ਤਾਂ 10 ਉਂਗਲਾਂ ਝੰਘਾਈ (ਫੇਫੜਿਆਂ) ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। (58) (ਜੋਗੀ ਲੋਕ ਅਧਿਆਤਮ ਨੂੰ ਵੀ ਸਰੀਰ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਵੇਖਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਨਾਦ ਜੋਤਿ ਸਭ ਸਰੀਰ ਦੀ ਰਚਨਾ ਨਾਲ ਹੀ ਸਬੰਧਤ ਹਨ।)

ਜਵਾਬ - ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਇਹਦਾ ਕੋਈ ਸਰੀਰਕ ਟਿਕਾਨਾ ਨਹੀ। ਆਪਨੇ ਮਤ੍ਰ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣਾ ਹੈ। ਜੇ ਨਿਰੰਕਾਰ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਟ੍ਰਿਸਟੀ ਹੋ ਗੌੜੀ ਤਾਂ ਸਬਦ ਦਾ ਸਰੀਰ ਵਿਚ ਝਕਕ ਟਰਾਂ ਨਾਲ ਵਾਸਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਮੂੰਹੋ ਆਪਨੇ ਆਪ ਸਿਫਤ ਸਾਲਾਹ ਦਾ ਸ਼ਬਦ ਨਿਕਲੇਗਾ। (59)

ਸੁਤ੍ਰ ਅਵਸਥਾ ਜੇ ਹਾਸਲ ਕਰਨੀ ਹੈ ਤਾਂ ਜੀਵਨ ਵਿਚ ਸਚ ਨੂੰ ਅਪਨਾ ਲਯੋ। ਸਬਦ ਰਾਂਹੀ ਫਿਰ ਹੰਕਾਰ ਮਰ ਜਾਵੇਗਾ। ਆਹ ਜੇਹੜਾ ਝੜਾ ਪਿੰਗਲਾ ਸੁਖਮਨਾ ਦਸਵੇ ਦੁਆਰ ਲੌੜ ਟਰਲੇ ਲੈਂਦੇ ਹੋ ਇਹ ਵੀ ਸੁਲਝ ਜਾਯੇਗੇ। (ਸੁਧਿਏ ਜੋਗ ਜੁਗਤਿ ਤਨਿ ਭੇਦ ॥) - (60)

ਸ਼ਬਦ, ਨਾਮ ਤੇ ਸਚ, ਦੀ ਹੋਰ ਅਹਮਿਯਤ (61, 62,

63)

? - ਇਹ ਹਾਥੀ ਰੂਪੀ ਮਤ੍ਰ ਸਰੀਰ ਚ ਕਿਥੇ ਵਸਦਾ ਹੈ?

● ਤੁਹਾਡੀ ਸੋਚ ਵਿਚ ਮਨ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਤੁਹਾਡੀ ਸੋਚ ਵਿਚ ਹੁਕਮ ਦੀ ਅਹਮਿਯਤ ਬਹ ਗੌੜੀ ਤਾਂ ਮਤ੍ਰ ਵੀ ਅਡੋਲ ਅਵਸਥਾ ਵਿਚ ਆ ਜਾਵੇਗਾ।

? - ਜੇ ਇਹ ਸਰੀਰ ਹੀ ਨਾਂ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਮਨ (ਚੇਤਨਾ) ਨੇ ਕਿਥੇ ਰਹਨਾ ਸੀ? ਭਾਵ ਜਦੋਂ ਰਚਨਾ ਹੀ ਨਹੀ ਸੀ ਤਾਂ ਸਬਦ ਦੀ ਲਿਵ ਕਿਵੇ ਲਗਦੀ? (66)

● ਅਜੇਹੀ ਅਵਸਥਾ ਵਿਚ ਫਿਰ ਅਜੂਨੀ ਰਬ ਨਿਰੰਕਾਰ ਅਵਸਥਾ ਭਾਵ ਨਿਰਗੁਨ ਸਰੂਪ ਵਿਚ ਰਹੰਦਾ। ਵਕਕ ਵਕਕ ਵਤ੍ਰਗਿਆਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਖੁਫ ਨਿਰੰਕਾਰ ਦਾ ਹੀ ਰੂਪ ਹੈ। (67)

? - ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਫਨਾਹ ਕਿਵੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਗਤ? (68)

● ਇਹ ਸਾਰਾ ਨਾਮ ਤੇ ਹੜਮੇ ਦਾ ਖੇਲ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਇਹ ਤੁਸੀ ਜੇਹੜੀ ਜੋਗ ਦੀ ਗਲ ਕਰਦੇ ਹੋ ਉਹ ਨਾਮ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸੰਭਵ ਹੀ ਨਹੀ। ਗੁਰੂ ਦੇ ਦਰ ਤੋਂ ਹੀ ਅਸਲ ਜੁਗਤ ਦਾ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ। (69)

ਗਲ ਸੇਵਾ ਦੀ ਹੈ ਸਤਿਗੁਰ ਮਿਲਾਪ ਦੀ ਹੈ। ਸਤਿਗੁਰ ਬਿਨਾਂ ਮਿਲਾਪ ਸੰਭਵ ਨਹੀ ਹੈ। (70)

ਹੰਕਾਰ ਤਹਸ ਨਹਸ ਹੋਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਹੀ ਮਤ੍ਰ ਤੇ ਜਿਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। (71)

ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਸਾਰੀ ਗਲ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਇਹ ਹੈ ਨਾਮ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਅਸਲ ਜੋਗ ਭਾਵ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਨਾਲ ਮੇਲ ਸੰਭਵ ਹੀ ਨਹੀ ਹੈ। ਨਾਮ ਤੋਂ ਹੀ ਫਿਰ ਸਾਨੂੰ ਸਮਝ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਸੰਸਾਰ ਝਕ ਖੇਡ ਹੈ ਜੋ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਨੇ ਰਚਾਈ ਹੋਈ ਹੈ।

ਸਬਦੇ ਕਾ ਨਿਬੇੜਾ ਸੁਨਿ ਤੂ ਅਤਥੂ ਬਿਨੁ ਨਾਵੈ ਜੋਗੁ ਨ ਹੋਈ ॥



ਸੁਮੇਰ ਤੇ ਹੀ ਹੋਈ ਸੀ ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ

ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਲਿਖ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ ਬਟਾਲੇ ਹੋਈ ਹੈ। ਓਦੋਂ ਹੀ ਸਿਕਖਾਂ ਨੇ ਉਝਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਲਿਖਿਆ ਹੈ, "ਸਿਕਖਾਂ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਕੇਹਾ ਜੀ ਇਹ ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ ਸੁਮੇਰ ਪਰਬਤ ਉਤੇ ਉਸ ਜਨਮਸਾਖੀ ਵਿਚ ਲਿਖੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਤੁਸੀ ਅਚਲ ਵਟਾਲੇ ਕਹੀ ਹੈ। ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਹਆ ਅਸਾਂ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਵਚਨਾ ਅਨੁਸਾਰ ਕਹੀ ਹੈ।" ਮਤਲਬ ਸਾਫ ਹੈ ਕਿ ਭਾਈ ਮਨੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਭਾਈ ਗੁਰਦਾਸ ਦੇ ਅਧਾਰ ਉਤੇ ਸਿਰਫ ਬਟਾਲਾ ਲਿਖਿਆ ਸੀ ਹੋਰ ਕੋਈ ਸਬੂਤ ਨਹੀ ਸੀ।

ਸੋ ਅਸੀ ਵੀ ਡਾਕਟਰ ਟਰਲੋਚਨ ਸਿੰਘ ਦੀ ਰਾਯ ਨਾਲ ਸਹਮਤ ਹਾਂ ਕਿ ਸਿਧ ਗੋਸਟਿ ਕੈਲਾਸ਼ ਪਰਬਤ ਤੇ ਹੋਈ ਨਾਂ ਕਿ ਬਟਾਲੇ। ਵੇਖੋ ਅਨੁਦਰਲੇ ਹਵਾਲੇ ਜਿਵੇ ਕਿ ਸਿਧ ਕੁਝ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਸਵਾਲ ਸਿਰਫ ਕੈਲਾਸ਼ ਤੇ ਬੈਠਿਆਂ ਹੀ ਕਰਨਗੇ ਨਾਂ ਕਿ ਬਟਾਲੇ:-

• ਕਵਨ ਤੁਮੇ ਕਿਆ ਨਾਉ ਤੁਮਾਰਾ ਕਉਨੁ ਮਾਰਗੁ ਕਉਨੁ ਸੁਆਯੋ ॥ (ਬਟਾਲੇ ਦੇ ਝਲਾਕੇ ਵਿਚ ਜੋਗਿਆਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੀ ਚੰਗੀ ਟਰਾਂ ਵਾਕਫੀ ਹੋ ਚੁਕੀ ਸੀ।)

• ਕਹ ਬੈਸਹੁ ਕਹ ਰਹੀਏ ਬਾਲੇ ਕਹ ਆਵਹੁ ਕਹ ਜਾਹੋ ॥

• ਕਨਦ ਮੂਲੁ ਅਹਾਰੋ ਖਾਇਏ ਅਤਥੂ ਬੋਲੈ ਗਿਆਨੇ ॥ (ਦੁਰਗਮ ਪਹਾੜਾਂ ਤੇ

ਰਹਨ ਵਾਲੇ ਜੋਗੀ ਹੀ ਅਜੇਹਾ ਕਹਯੇਗੇ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਜੋਗਿਆਂ ਨੂੰ ਕਨਦ ਮੂਲ ਖਾਨ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਨਹੀ ਸੀ।)

• ਕਿਸੁ ਕਾਰਨਿ ਗ੍ਰੇਹੁ ਤਯੋ ਉਦਾਸੀ ॥ ਕਿਸੁ ਕਾਰਨਿ ਝੁ ਖੇਖੁ ਨਿਵਾਸੀ ॥ (ਬਟਾਲੇ ਦੀ ਗੋਸਟਿ ਵੇਲੇ ਤਕਕ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਉਦਾਸੀ ਬਾਨਾ ਲਾਹ ਦਿੱਤਾ ਸੀ)

• ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਖਾਯੀ ॥ ਕਿਤੁ ਬਿਧਿ ਜੋਤਿ ਨਿਰੰਤਰਿ ਪਾਯੀ ॥ (ਆਸ ਜਾਂ ਤ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਮੁਕਾਤਨ ਦੀ ਗਲ ਜ਼ਿਆਦਾ ਬੋਧੀ ਲੋਕ ਹੀ ਕਰਦੇ ਹਨ।) ਫਿਰ ਸੁਤ੍ਰ ਅਵਸਥਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕਰਨਾਂ ਬੁਝ ਧਰਮ ਦਾ ਹੀ ਸਿਧਾਂਤ ਹੈ।

• ਫਿਰ ਲੋਹਾਰੀਪਾ ਜੇਹੇ ਨਾਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤਿਬਤ ਵਿਚ ਹੀ ਹਨ।

ਜੋਗਮਤ ਅਸਲ ਵਿਚ ਹੈ ਹੀ ਬੁਝਮਤ ਦੀ ਕਿਸਮ

ਸਾਹਬ ਉਸ ਵੇਲੇ ਮੌਜੂਦ ਮਝਹੀ ਫਿਰਕਿਆਂ ਦਾ ਵਰਤਨ ਵੇਹਾਰ ਜਾਂ ਸਿਧਾਂਤ ਕੁਝ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦਸਦੇ ਨੇ:

ਮੁਸਲਮਾਨ - ਮੁਸਲਮਾਨਾ ਸਿਫਤਿ ਸਰਿਯਤਿ ਪੜਿ ਪੜਿ ਕਰਹ ਬੀਚਾਰੁ ॥ ਬੰਦੇ ਸੇ ਜਿ ਪਵਹ ਵਿਚਿ ਬੰਦੀ ਵੇਖਨ ਕਉ ਦੀਦਾਰੁ ॥

(ਮੁਸਲਮਾਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਨੀ ਬਯਾਈ ਖੋੜ ਅਗਲੇ ਸਢੇ ਤੇ ਚਲਦਾ →

हट्ट जां जिद्द जां जोर नाल नही। इह रसता तां रजा दा ते प्रेम दा

जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रह नही पाईए ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईए ॥

आखनि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगनि देनि न जोरु ॥ जोरु न जीवनि मरनि नह जोरु ॥

कयी इहो जेहे सिर फिरे हिन्दु शरधालु होए हन जो सरिर नुं तपाउना ते किते रेहा सिद्धा खुदकशी ही कर लैदे सन। गुरू साहब ने थां थां जा समझाय आ कि लोको रूहानियत दा मारग हट्टु नही सहज दा है। इह तां प्रेम दा किस्सा है। पड़ो अयोध्या वाली साखी पत्रा 123.

हुकम जां रजा तों की मतलब?

हऊमै दी की कहानी है?

“किव सच्यारा होईए किव कूड़े तुटै पालि ॥” “हुकमै अन्दरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥” देखो प्रयाग वाली साखी।

नाम बाबत क्यो दुहायी देनी पई गुरू साहब नू

गुरू साहब ने दुहायी दित्ती क्युकि हिन्दु, बोधी, ते जैन साधूआं विच्च इक ओकार निरंकार रब्ब दा सिधांत है ही नही सी। जदों इह सरबव्यापक अकला दी होंद तों ही मुनक्कर सन तां नाम जप्पन दा सिधांत किये होना।

इह लोक सरिरक अभ्यास, क्रयावां ते सन्यास नू ही भगती समझदे सन। गुरू साहब ने उह पूजा विअर्थ दस्सी जिस विच्च रब्ब दी सिफत नां होवे।

इनां विच्च जोग दा इक्क होर तरीका वी प्रचलत है 'सहज जोग' जिस अनुसार वक्खरे वक्खरे आसन ला के हट्टु करनां जरूरी नही। बन्दा चौकड़ी मार के ध्यान लावे ते हौली हौली सुन्न अवसथा हासल करे।

हिन्दू पूजा दा तरीका

हिन्दू धरम ते बुद्धमत विच्च पूजा मुख तौर ते विअकतीगत है जदों कि इसलाम, ईसाईमत ते गुरमत अनुसार पूजा समूह विच्च वी हुन्दी है।

हिन्दूमत अनुसार -

पूजा 1. मूरती दी देवत्यां ते देवियां दी मुख तौर ते गणेश, शिव जी, स्री कृष्ण, स्री राम, हनुमान, विशनु भगवान, लकशमी, दुरगा, काली माता, सरसवती 2. रुक्खां ते तुसलीं आदि दी, 3. दर्यावां नदियां दी, 5. ब्राहमन दी, 5. कंवारी लड़कियां दी, कीती जांदा है। पूजा विच्च आरती उतारी जांदा है।

2. वेद-मंतर पड़े जांदे हन, 3. यंतर बणाए जांदे हन, 4. तप्य कीता जांदा भाव सरिर नू कशट दित्ते जांदे हन, जिस विच्च वरत (भुक्खे रहणा) वी शामिल है, 5. तीरथ यातरा, 5. वरत रक्खणा।

5. दरशन करनां वी बहुत पवित्र मन्था जांदा है।

गुरू साहब दे वेले तक्क प्रमेशवर दा नाम जप्पन दा रिवाज नही सी भाव सिफत सलाह किते घट्ट ही कीती जांदा सी। साधूआं विच्च तप्य ते सरिर नू कशट देना साला बद्धी इक्क ही आसन ते खड़े/बैठे आदि आदि। किते आहूती (कुरबानी) वी दित्ती जांदा सी किसे देवते तों कुरबान हो जाना वी प्रचलत सी। इह जुलम वेख के गुरू साहब दा पवितर कोमल हिरदा तडफ उठ्या ते उनां ने हर प्रसिद्ध धार्मिक सथान ते जा जा के दुहायी दित्ती कि प्रभू दी उसतत बगैर तुहाडे इह करम कांड विअर्थ नह।

गुरू साहब दी घालना दा वड्डा असर प्या। अज्ज हिन्दुआं विच्च निरंकार उसतत दा रिवाज आम देख्या जांदा है। साधू वी अकसर आपनी तपस्या वेले रब्ब वल ध्यान करदे हन।

हालां करम कांड अज्ज वी वड्डे पद्धर ते जारी हन पर अज्ज खुद्द हिन्दु

ही इनां करम कांडां नू विअर्थ समझन लग्ग प्या है।

नाम

गुरू नानक दा मिशन

नाम भाव किसे दा गुन, जस, उसतत, वड्याई, सिफतां, सलाहुणा, कीरती, प्रसंसा, महमा, शलाघा, उपमा, तारीफ। सो नाम जपना उस दी प्रापती दा इको इक्क रसता है। बिना शबद दे नाद-जोत वाली समाधी सिक्खी विच प्रवान नही।

बच्चा सभ तों पहलां मां कहना सिक्खदा है ते बाद विच्च उस ळ खुद दे नां दा वी ग्यान हो जांदा है। उहदा नां लैन ते झट्ट सिर चुक्कदा है। सो कौन नही जाणदा कि नाम जां नां दा की अर्थ दा है। ओए तेरा नां की है? 'नाम' लफज फारसी ते संस्कृत दोवां मूल भाशावां विच्च मिलदा है। यूरपीन मूलकां विच्च वी रलवां मिलवां जेहा ही शबद है। अंगरेजी ते जरमन विच्च जिवे नाम दी जगा नेम है ॥ लातीनी विच्च नामन, फरांसीसी ते इटालियन विच्च नोम, रूसी विच्च ईनां, सपैनिश विच्च नामबरे, रोमानियन विच्च नूमे जपानी विच्च नमाय कह दित्ता जांदा है। सो किन्नी हैरानी दी गल्ल, ना लफज सारी दुनियां विच्च सांझा है। हालां चीनी विच्च नाम नू मिंड, तुरकी विच्च इसम केहा जांदा है।

मूल रूप विच्च नां लफज दा मायना दा है: 'गुन' 'सिफत' जां 'जस'। आदि काल तों ही किसे दा नां उस दे गुणां अनुसार रक्खा जांदा है। 'लंडा' 'काणा' 'फीना' जे सोहना होवे तों सुन्दर सिंघ, रूड सिंघ जां सोहन सिंघ। हां, कई वारी मापे तां नां रक्ख लैदे हन मल्ल सिंघ भाव भलवान पर बन्दा माडआ निकल आउदा है। किते नां दा है उच्चा पिंड ते किते नीवां बजार। जे पिंड दुआले किल्हा दा सी तां नां 'किल्हा फुम्मन सिंघ'। बजार काठियां ते लून मंडी।

ठीक एसे तरां रब्ब दा नां वी उहदे गुणां जां सिफतां विच्च ही है। पर रब्ब अजेही ताकत है जिस दा ब्यान नही कीता जा सकदा। जे इक्क मोटी जेही उदाहरन दित्ती जाए 'बिजली दे करंट' दी तां शायद गल्ल कुझ सपश्ट हो सकदी है। करंट नाल पक्खा चलदा है जो हवा दिन्दा है, हीटर चलदा है जो गरमी पैदा करदा है, बलब ट्यूबलाईट जगा सकदा है, पानी खिच्चन वाला पम्प चला सकदा है आदि आदि...। ओसे तरां रब्ब दे गुन हन कि: उह करतार है: पैदा करदा है, दातार - जीवा ळ दातां दिन्दा है, अचूत - तबाह नही हो सकदा, अंतरजामी - सार्थां दे दिल्लां दी जाणदा है, मोहन - मनां ळ मोह लैन वाला, कृष्ण - हंकार भन्नन वाला, जगदीश - जगत दा मालक है, हरी-सभ तो प्यारा, वासदेव- खूबसूरत, आजूत्री -जूनां तो रहत, निरवेर-वैर रहत, निरभउ- डर तों रहत, अकाल- समें सीमा तों रहत, गुरप्रसादि गुरू दी किरपा सदका नजर आउन वाला, सैभ- खुद ही सथापत आदि।

भाव इस प्रकार उस रब दे करोड़ां अरबां ना हो सकदे हन पर पूरा नां कोयी नही। हां इक्क नां थोडा ज्यादा ढुकवा है ते उह है सच्च जां सति जां सतिनाम। एसे करके हीं पंचवे नानक ने सैकड़े नां लैन उपरंत लिख्यां है: किरतम नाम कथे तेरे जेहबा ॥ सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ (पं.1083)

दसम नानक ने जाप साहब विच्च 'सतिनाम' दे हजारां नाल दित्ते ते केहा कि: तव सरब नाम कथे कवन करम नाम बरनत सुमत्त ॥ ऐ निरंकार असी तेरे गुणां दे आधार ते तैळ नाम दे रहे हां।

सारी सिंसटी ही उस प्रमातमा दी रचना है ते जित्रियां वी चीजां पैदा कीतिया हन उह ही उहदा नां है: प्रिथवी ळ पैदा करना वाला, सूरज ळ पैदा करन वाला, हाथी ळ पैदा करन वाला, कीड़ी ळ पैदा करन वाला, पहाड़ पैदा करन वाला भाव: 'जेता कीता तेता नाउ' ॥ (जपुजी) सो उस प्रभू नू किवे ध्याईए जो है ही निरंकार? • सो हरि पुरखु अगमु है कहु कितु बिधि पाईए ॥ (पं.644)

उतर:- अमृत वेला सचु नाउ वड्यायी वीचारु ॥ गुरबानी विच्च फिर इक्क नही हजारां थावां ते जुआब दित्ता है कि उस दी सिफत करके ही उस ळ ध्याउना है:- • हरि गुन पड़ीए हरि गुन गुणीए ॥ हरि हरि

पुस्तक नाम कथानित सुणीए ॥

मै कुरबान जाना हां तेरे नावां तों, तेरियां सिफतां तों • बलेहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ (पं.1168) सो उस रब्ब दियां सिफतां ही उस दा नां हन।

प्रभू दियां सिफतां फिर आपा गा के कीरतन राही कर सकदे हां, गल्लां बातां ते वीचारां राही कर सकदे हां। सो जिसतरां वी उहदियां सिफतां होन सभ नाम ही है।

• भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥ • हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करह वापारु ॥ हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥ • सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ • नामक नामु सलाह तूं अंतु न पारावारु ॥ • गुरमती नामु सलाहीए दूजा अवरु न कोई ॥ • हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिब लाय ॥ अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचे सोभा पाय ॥ • सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥ नामु सलाहनि सद सदा हरि राखह उर धारि ॥ • गुरमुखि पड़ह हरि नामु सलाहह दरि सचे सोभा पावण्या ॥ (गुरबानी विच्च अजेहियां लक्खां उदाहरणां हन)

सो रब्ब दा नां जप्पन दा मतलब वी सिद्धा जेहा होया भाव उहदियां सिफतां ताकतां गाउणां। गुणगान गा के कीता जा सकदा है, वीचारां रांही कीता जा सकदा है। पड़ह के बोल के कीता जा सकदा है। सो नाम नूं सुणना, वीचारना, खोजना वी नाम जप्पन तुल्ल ही हुन्दा है।

तीसरे नानक ने उदाहरणां दे दे के दस्स्या गया कि वेखो फलाने भगत ने पूजा रांही प्राप्त कीता, फलाने ने पथर 'चों पा ल्या, फलाने ने तप्प रांही हासल कर ल्या तां गुरू साहब ने किसे दी नुकताचीनी करन दे बिजाए सिद्धा कह दिता:-

चहु जुगा का हुनि निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥ जतु संजम तीरथ ओना जुगा का धरमु है कलि मह कीरति हरि नामा ॥2॥

नोट- जे फिर वी तसल्ली नां होयी होवे तां हेठां कुझ होर वी गुरबानी दियां पवित्र तुक्कां दितियां हन जो साबत करदियां हन कि

जस गाउणा, उसतत, वड्याईआं, सिफत सालाह, कीरती करनी ही नाम है ते नाम ही उस दी प्रापती दा इको इक्क रसता है। हेठां गुरबानी दियां तुकां दितियां गईआं हन इह दस्सन लई कि जस गाउना भाव गुरबानी पाठ सिक्ख दा रूहानियत मारग है। हर तुक्क दे मगर गुरू ग्रंथ साहब दा पत्रा नम्बर दिता गया है। इह इस करके इथे दितियां जा रहिया हन क्युकि पंजाब दे अजोका दौर दे जोगियां ने वड्डा कुफर तोल के बहुत किताबां लिख मारियां हन इह साबत करन लई कि 'नाद - जोत' तें सुरत टिकायी रक्खना नाम है। उह सिक्खां नूं समाधी वाले पासे लिजा रहे हन जदों कि सिक्खी कारजशील मनुक्ख दा धरम है:-

• गुरमती सचु सलाहना जिस दा अंतु न पारावारु ॥ घटि घटि आपे हुकामे वसै हुकमे करे बीचारु ॥ गुर सबदी सालाहीए हउमै विचहु खोइ ॥-37 • हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन के करमा ॥ -642 • मुहौ कि बोलनु बोलीए जितु सुनि धरे प्यारु ॥ अंमृत वेला सचु नाउ वड्यायी वीचारु ॥-2 • जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाह ॥-5 • लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥-16 • जिनी सुनि के मन्ना तिना निज घरि वासु ॥ गुरमती सालाह सचु हरि पायआ गुणतासु ॥ -27 • हरि गुन गावह हरि नित पड़ह हरि गुन गाय समाय ॥ -28 • मन मेरे करते नो सालाह ॥ -43 • सदा सदा सालाहीए अंतु न पारावारु ॥-49 • हरि गुन पडीए हरि गुन गुणीए ॥ हरि हरि नाम कथा नित सुणीए ॥ मिलि सतसंगति हरि गुन गाए जगु भउजलु दुतरु तरीए जीउ ॥1॥ -95 • गुरमुखि पड़ह हरि नामु सलाहह दरि सचे सोभा पावण्या ॥-127 • अनदिनु गुन गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥-130 • कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ अगनी गंदु पाए लोहारु ॥ गोरी सेती तुटै भतारु ॥ पुती गंदु पवे संसारि ॥ सिफती गंदु पवे दरबारि ॥-143 • बार बार हरि के गुन गावउ ॥ -344 • गुन गावा गुन बोली बानी ॥ -367 • गुरमति हरि गुन बोलहु जोगी इहु मनुआ हरि रंगि भेन ॥-367 • बकै न बोलै हरि गुन गावै ॥-411 • गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे राता हरि गुन गाउ ॥-415 • सचा सबदु सची है बानी ॥-424 •

नामु सुणीए नामु मन्नीए नामे वड्यायी ॥ नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पायी ॥-426 • सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ -463 • वड्यायी वडा पायआ ॥-467 • भगत तेरे मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥-468 • अंमृत बचन सतिगुर की बानी जो बोलै सो मुखि अंमृतु पावै ॥-494

(अजेहियां हजारान होर वी पवित्र तुकां असी गुरबानी विचों लईआं हन। सारियां इथे देणियां संभव नहीं। जे किसे वीर नूं अजे वी शकक होवे तां वैबसाईट ा.जनिदउगन्युमउ. चोम ते पूरी लिंसट वेखी जा सकदी है जी।)

सो गुरबानी विच्च हर थां इहो आया है कि सिफत सालाह ही उहदी प्रापती दा इको इक्क राह है।

—◆—

गुरबानी वी तां नाम ही है

क्युकि गुरबानी विच्च करतार दी सिफत सलाह है।

गुरू नानक दे घर दा इक्क मुड्डला तरीका है कि प्रभू प्रापती लई इनसान उस दी उसतत करे तें आपनी उणतायी नूं अग्गे रक्खे। गुरबानी विच्च बस दो ही चीजां हन इक्क सिफत सलाह ते दूसरा इनसान दी उणताई। क्युकि 'जस्स' ही नाम ुदा है इस करके गुरबानी ही नाम है। फिर वी गुरू साहबान ने गल्ल साफ कर दिती है कि बानी वी नाम है। हेठां वेखो परमाण:-

• गुरमुखि बानी नामु है नामु रिदे वसायी ॥(1239) • गुन गावा गुन बोलौ बानी ॥ 367), • बानी गुरू गुरू है बानी विचि बानी अंमृतु सारे ॥(पं-982) • सतिगुर की बानी सति सति करि मानहु इउ आतम रामे लीना है ॥(पं-1028) • जनु नानकु बोलै अंमृत बाणी ॥(प96) • अनदिनु गुन गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥-130 • अंमृत बचन सतिगुर की बानी जो बोलै सो मुखि अंमृतु पावै ॥-494 • सुनि वडभागिया हरि अंमृत बानी राम ॥ -545 • बिनवंति नानक सदा गाईए पवित्र अंमृत बानी ॥-545 • निरमल सबदु निरमल है बानी ॥ निरमल जोति सभ माह समानी ॥ निरमल बानी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावण्या ॥ • अनदिनु गुन गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥-130 • साची बानी सदा गुन गावै इसु जनमै का लाहा है ॥-1053 • अनदिनु बानी सबदे गावै साचि रहै लिब लाय ॥-1259 • साची गति साचै चितु लाए ॥ गुर की बानी सबदि सुणाए ॥-1277 • अनदिनु बानी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावण्या ॥ • अंमृत सबदु अंमृत हरि बानी ॥ • साचे राती गुर सबदु वीचार ॥ अंमृतु पीवै निरमल धार ॥ • गुर की बानी अनदिनु गावै सहजे भगति करावण्या ॥ • अनदिनु बानी सबदे गावै साचि रहै लिब लाय ॥-1259 • अनदिनु कीरतनु सदा करह गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरू का सद उचरह जुगु जुगु वरतावणहारा ॥-593, • हरि कीरति उतमु नामु है विचि कालिजुग करनी सारु ॥ मति गुरमति कीरति पाईए हरि नामा हरि उरि हारु ॥-1314

—◆—

शबद की है?

क्युकि सिद्ध जोगी बिनां कोयी लफज कहे समाधी लायी बैठे रहन्दे हन ते सुरत ते ध्यान दिन्दे हन इस पद्धती दा गुरू साहब ने खंडन कीता ते उपदेश दिता है कि उहदी सिफत सलाह दा शबद कहे बगैर भगती अधूरी है।

सो गुरमत दा सबद : सिक्खी विच्च गुरू का 'शबद' सतिनाम, वाहगुरू है जां फिर गुरबानी दी कोयी इकायी जां फिर पूरी गुरबानी वी। उदाहरन दे तौर ते जद आपां मूल मंतर दा सिमरन करदे हां तां उह वी शबद है। पूरा जपुजी वी शबद है। हुकमनामे च आया पूरा पाठ वी शबद है। (सचा संबदु सची है बानी ॥ 1044, गुर का सबदु अंमृत है बानी ॥1057)। सो गुरबानी दी इकायी ही शबद है। इस प्रकार कदी निरंकार दी खोज संबंधी विचार करनी वी शबद है। उहदे गुणां बाबत वीचार करनां वी शबद है।

—◆—

इह गल्लां इस करके लिखणियां पईआं हन क्युकि अज्ज पंजाब विच वक्ख वक्ख डेरे उतपन हो चुक्के हन जो गुरमत बाबत लोकायी नूं गुमराह कर रहे हन। इनां दे आखे गुरू नानक वी जोगी सी। इह 'गुरमत सिधांत' बाबत गुमराह करके लोकायी नूं रब्ब दी उसतत तौ वरज लोकां ल सरीरक अभ्यासां वल धक्क रहे नैं।

इनां डेर्यां विचौं ही इक डेरे दी किताब 'गुरमत सिधांत' विचौं कुझ वत्रणियां दे रहे हं कि वेखो किवे गुमराह कर रहे ने भोली भाली लोकायी नूं:

आह वेखो इन्हां दी ल्याकत!

"नाम की हे?"

अखे नाम दा ब्यान करनां असंभव है।

1. नाम की हे? नाम चेतन जां सबद दी धार ल कहदे हन। इस विच्च थरथराहट हुन्दी है जां आवाज़ प्रगट हुन्दी है उसळ असीं नाम कहदे हं- पत्रा 359। (सुन लयो! नाम धार हो गया!)

2. नाम- मालक दा सच्चा नाम लफज नही, उह कोयी होर चीज है। उह मिट्टियां ते रस भरियां धुनां हन उस विच्च प्रकाश वी है। -पं.351 (हा हा!!)

3. नाम दा भाव है शबद जां अनहद धुन। -पं.460

4. असली नाम गुपत है। -पं.79 अते पं.365

सो इह है इनां दा नाम। अखे नाम दा मतलब रब्ब दा नां नही नाम कुझ होर चीज है। ते अगे जा के इनां साफ ही कह दिता कि जोत दा वेखना ते धुन दा सुणना ही नाम है।

'नाम' दा सिधांत मुट्टला मसला है जे इथे इह हेरा फेरी नां करनां तां इहनां दी अगे गल्ल तुरदी नही। इह फिर गुरबानी विचौं अधूरा शबद चुक्क के मिसाल देनी शुरू कर दिन्दे हन। कुझ अजेहियां दितियां उदाहरणां देखो:-

1." धुनि मह ध्यानु ध्यान मह जान्या गुरमुखि अकथ कहानी ॥" पर चलाकी नाल अगली तुक्क नूं जान के छड्डु जाणगे - "... नानक तिन के सद बलेहारी जिन एक सबदि लिव लायी ॥" (सगगस अंग- 879) जां फिर कहणगे शबद दा मतलब अन्दर वाला शबद।

2. सुरति सबदु साखी मेरी सिंडी बाजै लोकु सुने ॥ पतु झोली मंगन कै तायी भीख्या नामु पडे ॥ (पर अगली तुक्क विच्च कीरत दी गल्ल है उनुं इह जान बुझ के छड्डु जाणगे। "सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥" (सगगस अंग-877)

अजेहियां इक्क नही, इनां ने गुरबानी दियां हजारं तुक्कां दे दे के भोले भाले गुरसिक्खां नूं गुमराह कीता होया है।

जदौं कि सच्चायी इह है कि गुरू साहब ने इनां दे बिनां-सबद-समाधी वाले अभ्यास दा थां थां खंडन कीता है।

"बारह मह जोगी भरमाए सन्यासी छिय चारि ॥ गुर के सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ बिनु सबदे सभि दूजे लागे देखहु रिदे बीचारि ॥ नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रख्या उर धारि ॥"

क्युकि गुरमत कारजशील मनुक्ख दा रसता है ते जोगमत सन्यास वल जांदा है इह करके इनां नवी नसल दे जोगी थां थां फसदे ने ते फिर हासोहीना जेहा झूठ बोलना पैदा है इहनां नूं। क्युकि गुरमत विच्च कई वक्खरे सिधांत जां संकलप हन जिवें: नाम-सिफत सलाह, गुरबानी नितनेम, जाप गुरबाणी, अरदास, सच्च दा, सेवा, कीरतन, बहन्धां उठद्यां प्रभू नूं याद करना, इशानान, अमृत वेला, भाना जां हुकम मन्नणा, सन्यास खंडन, ग्रिसत निभाउणा, अमृत छक्कणा, किरपान, शहीदी आदि।

क्युकि डेर्यां विच इहनां नूं मुफत दे सेवादार वी चाहीदे हुन्दे ने हालां जोगमत विच सेवा दा सिधांत है ही नही। जे इनां नूं पुच्छो कि सिक्ख-गुरमत दा तां सेवा दा सिधांत है पर तुसी सेवा क्यो लेंदो हो? फिर फसे फसाए कहणगे "देखो जी! शुरू च सेवा करनी है बाद विच्च शबद चल पऊगा।" जे इशानान दी गल्ल आई तां कहणगे "जी अन्दर दा इशानान करनां है।" ते कीरतन ते आ "जी अन्दर वाला कीरतन करनां है।" पर जदौं गुरू दे सिधांत भाव बहन्धां उठद्यां नाम जपन दी गल्ल आउदी है तां इह लाजवाब हो जादे हन। किट्टा वड्डा गुनाह कर

रहे हन जदौं कहन्दे हन कि धरम दे रसते ते सच्च बोलना वी ऐना जरूरी नही। सिक्ख अकाल पुरख दी सिफत सलाह करदा है, इह लोक उसळ रब्ब दी उसतत तौ रोक, आसना ते अभ्यासां च पा रहे हन। किथे लेखा देणगे?

खैर जगां जुगातरां तौ अजेहा हुन्दा आया है। शैतान कदी किस भेस ते कदी किस विच्च हुन्दा है। हरनाखश ने वी प्रहलाद ल नाम जपन तौ ही रोक्या सी। याद रक्खो गुरू नानक पातशाह ने सानूं 'नाद-जोत' दे जोग अभ्यासी दौड़ च पैत तौ वरज्या है। देखो अंग 876 तौ 879।

गुरबानी दियां उह तुकां जो जोगियां दा झूठ नपड़द कर दिन्दियां हन जोगी कहदे हन कि जोग साधनां उपरंत अलौकिक अनुभव हुन्दे हन जिवे मथे ते लाट (जोत) दिसदी है जां कत्र विच्च सां सां (अनहद नाद जां सबद) सुणायी दिन्दी है। गुरमत कहदी है कि नाम जपन नाल भाव रब दा जस गाउन ते सुनन करके इहो जेहियां सारियां प्रापतियां आपने आप हो जांदियां हन, जिवे मक्खन कबूद्यां छिड्डी आपने आप मिल जांदी है।

ध्यान रक्खो जेहनां नूं इह नाद जोत कहन्दे हन उह सरीरक क्रयावां हन जो सुरत बड्डान ते महसूस हुन्दियां हन। सानूं अहसास होना चाहीदा है कि जीवत सरीर विच निरंतर हल चल हो रही हुन्दी है। दिल्ल धक धक कर रेहा है। एसे तरां साडा मेहदा (शटोमउचह) निरंतर फुल्लदा अते सुकड़दा रहन्दा है। अक्खां बन्द करके दबाय पा के वेखो साडे आपटिक नरव नूं बिनां रोशनी दे ही जोत (लाईट) दा अनुभव हो जांदा है। इह लिखारी बिनां किसे यंतर दे आपने दिल्ल दी धड़कन (नबज़) गिन सकदा है।

सुणिए जोग जुगत तन भेदु ॥ (नाम सुनन करके उह जुगतां आपने आप आ जांदियां हन जिनां नाल सरीरक भेद खुलदे हन)

- ऊठत बैठत सोवत जागत हरि ध्याईए सगल अवरदा जीउ ॥
- अनहद धुनि वाजह नित वाजे गायी सतिगुर बानी ॥
- गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनुआ गावै ॥
- गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुन गावण्या ॥
- सतसंगति बह हरि गुन गायआ ॥ अनदिनु हरि सालाहह साचा निरमल नादु वजावण्या ॥
- अनहद धुनि वाजह नित वाजे गायी सतिगुर बानी ॥
- सची बानी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ अनदिनु सचु सलाहना धनु धनु वडभाग हमारा ॥-564 ● नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥
- गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनुआ गावै ॥

अजेहियां तुकां गुरबानी विच्च इक्क वार नही बार बार हजारं वार आईआं हन। दर असल सिफत सलाह वाली गल्ल तां गुरू ग्रंथ साहब दे हर थां हर पत्रे ते आई है।

अंत विच गुरसिक्खां नूं सलाह है कि इनां पाखंडियां दा आसरा छड्डु के गुरू नानक दी शरन विच आयो। जपुजी दे लड्डह लग्यो। चड्डहदी कल्हां हासल करो। जिथे फिर फिर चिंतावां तौ मुक्त हो के अनन्द दी अवस्था मिलदी है। फिर जे उहदी बखशश हो गई तां बन्दा रजा विच चलना शुरू करदा है।

सवरे उठो। इशानान करो। दिन दी शुरूआत जपुजी साहब तौ करो। कोशिश करो होली होली सम्पूरन गुरबानी नितनेम दे लड्ड लग जाओ।

जे अजे मन्न त्यार नही तां घट्टो घट्ट सवरे जपुजी, शामी रहरास अते कीरतन सोहला तां करो।

जे इनां नही कर सकदे जपुजी दा ही पाठ कर ल्या करो।

जे इहदे वासते वी अजे टाईम कट्टना मुशकल आ रेहा है तां घट्टो घट्ट इक कम तां कर ही सकदे हो:-

सवरे जदौं नीद खुल्लदी है। उठ के बिसतरे ते ही बह जायो ते पंज वारी मूल मंतर दा पाठ करो। वाहगुरू अगे अरदास करो कि ऐ अकाल पुरख मेरा दिन अज्ज चड्डहदी कला विच निकले। फिर चिंता तौ दूर रक्खी। वेखी किसे दा बुरा नां करां। ते बस फतह बुला के आपने रोजाना दे कार वेहार ते चड्डहायी कर द्यो।